अच्छी कीमत मिलने से बढ़
सकता है शुगर एक्सपोर्ट

इंटरनेशनल प्राइस में तेजी, 20 लाख टन तक हो सकता है एक्सप

[जयश्री भोसले | पुणे]

शुगर एक्सपोर्टर्स इस बात को लेकर आशान्वित हो गए हैं कि देश का शुगर एक्सपोर्ट बढ़कर 20 लाख टन तक जा सकता है। इसकी वजह शुगर के इंटरनेशनल प्राइसेज में आई तेजी और बजट में महाराष्ट्र सरकार की एक घोषणा है। महाराष्ट्र सरकार ने गन्ने की खरीद पर मिलने वाली छूट को शुगर एक्सपोर्ट से लिंक कर दिया है। पिछले हफ्ते शुगर के एक्स-मिल प्राइसेज में करीब 2.5 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव शुगर मिल्स एसोसिएशन के मैनेजिंग डायरेक्टर संजीव बाबर का कहना है, 'शुगर की निर्यात कीमतें आकर्षक हैं। हाल ही में कुछ मिलों ने एक्सपोर्ट डील्स पर दस्तखत किए हैं। मार्च में हमें और कॉन्ट्रैक्ट्स होने की उम्मीद है। चूंकि, ब्राजील अप्रैल में मार्केट में एंट्री करेगा, इसलिए चीनी मिलें अभी एक्सपोर्ट करना चाहेंगी।'

2,700 रुपये क्विंटल का रेट

इंटरनेशनल मार्केट में व्हाइट शुगर की डिमांड बढ़ी है, जिसके कारण एक्सपोर्टर्स ने शुगर मिलों को 2,650-2,700 रुपये प्रति क्विंटल का हायर रेट ऑफर करना शुरू कर दिया है

इसके अलावा, इंटरनेशनल मार्केट में व्हाइट शुगर की डिमांड (मुख्य रूप से म्यांमार में) बढ़ी है, जिसके कारण एक्सपोर्टर्स ने शुगर मिलों को 2,650-2,700 रुपये प्रति क्विंटल का हायर रेट ऑफर करना शुरू कर दिया है। वहीं, महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को अपने बजट में घोषणा की है कि जो चीनी मिलें अपने तय कोटे के बराबर शुगर का एक्सपोर्ट करेंगी, केवल उन्हें ही परचेज टैक्स पर सरकारी छूट का लाभ मिलेगा। तीन फीसदी के फेयर एंड रिम्यूनरेटिव प्राइस (एफआरपी) पर

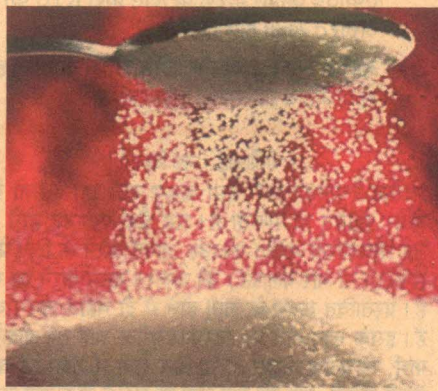

चीनी मिलों को 80-100 रुपये प्रति टन परचेज टैक्स के
में देना होगा। इसके अलावा, एक हफ्ते में घरेलू बाज
चीनी की कीमतों में प्रति क्विंटल 60-80 रुपये तक की ब
हुई है। कोल्हापुर की S-30 ग्रेड शुगर का एक्स-मिल
बढ़कर 3,000-3,080 रुपये क्विंटल पर पहुंच गया है, ज
हफ्ते पहले 2,950-3,000 रुपये पर था। बाबर के मुत
'अक्टूबर-17 मार्च के बीच चीनी की घरेलू कीमतों में
फीसदी की तेजी आई है, जबकि इंटरनेशनल प्राइस करी
फीसदी बढ़े हैं।' पिछले कुछ दिनों में मिल्स में ज्यादा ख
हुई है। महाराष्ट्र के कोल्हापुर के एक शुगर मिल मालि
बताया, 'शुगर में गतिविधियां तेज हुई हैं और मिलों से ची
खरीदारी भी बढ़ी है। गर्मियों की डिमांड की वजह से ऐ
सकता है या हो सकता है कि ट्रेडर्स कीमतों में तेजी की उ
में मार्केट में अपना स्टॉक ना ला रहे हों।'